SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

स्वामी विवेकानंद के शिक्षा दर्शन की वर्तमान युग में प्रासंगिकता

विक्रम सिंह चंदेल, एम.एड. प्रशिक्षार्थी, **अर्चना वर्मा,** पी.एच–डी., शिक्षा विभाग
शास. शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय, शंकर नगर, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Authors
विक्रम सिंह चंदेल, एम.एड. प्रशिक्षार्थी
अर्चना वर्मा, पी.एच–डी.
E-mail : vikramchandel184@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 24/02/2025
Revised on : 25/04/2025
Accepted on : 05/05/2025
Overall Similarity : 00% on 26/04/2025

शोध सार

युगनायक, युगदृष्टा, तेजस्वी, महान विचारक, स्वामी विवेकानंद की बौद्धिक प्रतिभा अतुलनीय थी। वे आधुनिक भारत के महान धार्मिक नेता तथा संस्कृति के उन्नायक थे। उन्होंने भारतीय शिक्षा प्रणाली में सुधार की आवश्यकता को बहुत पहले ही समझ लिया था। स्वामी विवेकानंद के अनुसार ''शिक्षा का अर्थ मनुष्य में अंतर्निहित शक्तियों का पूर्ण विकास है, ना कि मात्र सूचनाओं का संग्रह।'' यदि शिक्षा का अर्थ सूचनाओं से होता तो पुस्तकालय संसार के सर्वश्रेष्ठ संत होते तथा विश्व कोष ऋषि बन जाते। उनका मानना था कि "शिक्षा केवल जानकारी प्राप्त करने की प्रक्रिया नहीं है, वरन् यह शारीरिक, मानसिक, चारित्रिक, आध्यात्मिक व नैतिक विकास का माध्यम है।" वर्तमान संदर्भ में उनके विचार और भी अधिक प्रासंगिक हो गए हैं क्योंकि वर्तमान शिक्षा प्रणाली में नैतिक मूल्य, व्यवहारिक ज्ञान और चरित्र निर्माण की शिक्षा की कमी हो गई है। स्वामी विवेकानंद जी के अनुसार "हमें वह शिक्षा चाहिए जिससे चरित्र का निर्माण हो, मन की शक्ति बढ़े, बुद्धि का विस्तार हो, और जिससे व्यक्ति अपने पैरों पर खड़ा हो सके। हमें सर्वत्र सभी क्षेत्रों में मनुष्य बनने वाली शिक्षा दी जानी चाहिए। स्वामी जी मानव जीवन का लक्ष्य आत्मज्ञान या आत्मानुभूति को मानते थे। आत्मज्ञान का अर्थ है,आत्मा को समझना और अपने भीतर की शक्ति को पहचानना। शिक्षा हर समस्या का एकमात्र समाधान है, हर कदम में हमें शिक्षा की आवश्यकता होती है। छात्रों व नवयुवकों मे शिक्षा प्राणवायु का काम करती है। ''शिक्षा का उद्देश्य तथ्यों का संकलन नहीं बल्कि मन की एकाग्रता प्राप्त करना है।'' स्वामी विवेकानंद जी के अनुसार "शिक्षा वह जानकारी नहीं है जो आपके मस्तिष्क में भर दी जाती है और जीवन भर बिना पचाए यहाँ–वहाँ घूमते रहती है हमें जीवन निर्माण, मानव निर्माण, चरित्र निर्माण के विचारों को आत्मसात करना चाहिए, यदि आपने इन विचारों को आत्मसात कर लिया है और उसे अपना जीवन और

चरित्र बना लिया है तो आपने किसी भी ऐसे व्यक्ति से अधिक शिक्षा प्राप्त कर लिए जिसने एक पूरी लाइब्रेरी को कंठस्थ कर लिया है। सिर्फ किताबी ज्ञान प्रदान करने वाली शिक्षा को मानव के लिए निरर्थक मानते हुए इस पर कटाक्ष करते हुए कहते हैं। "खरश्च चंदन भारवाही भारस्य वेता न तु चंदनस्य अर्थात चंदन ढोने वाला गधा सिर्फ उसके वजन का अनुमान लगाता है चंदन के मूल्य का नहीं।"

मुख्य शब्द

स्वामी विवेकानंद, शिक्षा–दर्शन, योग, आध्यात्म, चरित्र निर्माण.

उठो,जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य की प्राप्ति ना हो जाए।

स्वामी विवेकानंद

परिचय

स्वामी विवेकानंद के बचपन का नाम नरेन्द्र नाथ दत्त था। वे महान संत श्री रामकृष्ण परमहंस के प्रमुख शिष्य थे। उनका जन्म 12 जनवरी 1863 को कलकत्ता में हुआ था। वे प्रखर मेधा के धनी धैर्यवान, प्रज्ञावान, तत्वज्ञान के मर्मज्ञ, महान कर्मयोगी तथा भारतीय संस्कृति के ध्वजवाहक थे। उनका दृष्टिकोण अत्यंत व्यापक था। वे वेदांत और योग को पश्चिमी दुनिया में ले कर गए। उनका दर्शन और विचार पाश्चात्य देश भी स्वीकार करते हैं। उन्होंने 1893 में शिकागो में आयोजित विश्व धर्म संसद में भारत का प्रतिनिधित्व किया। उन्होंने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की जो समाज सेवा और शिक्षा के लिए समर्पित है। स्वामी विवेकानंद का निधन 4 जुलाई 1902 को 39 वर्ष की अल्पायु में हुआ।

स्वामी विवेकानंद का शिक्षा दर्शन

विवेकानंद जी कहते हैं, बालक शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, नैतिक व आध्यात्मिक विकास के द्वारा निर्भीक, बलवान योद्धा के रूप में देश की उन्नति में सहयोग करते हुए जागरूक व कर्तव्यनिष्ठ नागरिक बन सकता है। मनुष्य के अंतर्मन में लौकिक एवं आध्यात्मिक ज्ञान प्रारंभ से ही मन में रहता है। इस अंर्तनिहित पूर्णता की अभिव्यक्ति ही शिक्षा है। सत्य, कर्तव्य पालन, मन, वचन, कर्म से पवित्र रहना, आत्मनिष्ठ, आत्म नियंत्रण जैसे गुणों के विकास द्वारा उच्च चरित्र का निर्माण होता है। शिक्षा के द्वारा देश प्रेम की भावना जागृत करके राष्ट्रीयता की भावना का विकास करने वाली शिक्षा दी जानी चाहिए। हमारे देश में अनेक भाषा, धर्म,जाति, संप्रदाय,संस्कृति के लोग निवास करते हैं। अतः शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो अनेकता में एकता की भावना का विकास कर सके। शिक्षा व्यक्ति में आत्मविश्वास व आत्मत्याग की भावना विकसित करने वाली होनी चाहिए।

शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिसके द्वारा व्यक्ति में समाज सेवा की भावना तथा विश्व के प्रत्येक प्राणी मात्र के प्रति प्रेम व विश्व बंधुत्व की भावना का विकास हो सके। वर्तमान शिक्षा पर कटाक्ष करते हुए स्वामी जी कहते हैं "हमारी शिक्षा व्यवस्था ऐसी है जो बच्चों को केवल रटा–रटा कर तोता बना रहे हैं और उनके मस्तिष्क में कई विषय ठूंसते जा रहे हैं। वर्तमान समय में शिक्षा का संबंध नैतिक व चारित्रिक विकास से न होकर केवल बौद्धिक ज्ञान प्राप्त करना रह गया है।" विवेकानंद जी इस संबंध में कहते हैं शिक्षा की वर्तमान व्यवस्था 'बाबू' पैदा करने की मशीन बन कर रह गई है।

विवेकानंद जी मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा के पक्षधर थे। उनका मानना था कि शिक्षा पर सभी का समान अधिकार होना चाहिए। निर्धन व्यक्ति जो शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकता, उस तक भी शिक्षा की पहुंच सुनिश्चित करनी चाहिए। वे शिक्षा को केवल किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं रखना चाहते थे, अपितु व्यावहारिक एवं कौशल पर आधारित शिक्षा पर जोर देते थे। आत्मनिर्भरता और स्वावलंबन की शिक्षा के द्वारा स्वामी विवेकानंद युवाओं को आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा देते थे। वे शिक्षा को रोजगार और आत्मनिर्भरता से जोड़कर देखते थे।

विवेकानंद जी नारी शिक्षा पर बल देते हुए उन्हें मानसिक धरातल पर आत्मनिर्भर बनाते हुए ऐसी स्थिति पर

पहुँचा देना चाहते थे, जहाँ वे अपनी समस्याओं को अपने ढ़ंग से सुलझा सकें। जब तक समाज में स्त्रियों को समान अवसर व शिक्षा नहीं मिलेगी तब तक कोई भी समाज और राष्ट्र प्रगति के पथ पर अग्रसर नहीं हो सकता। विवेकानंद जी के शिक्षा दर्शन का प्रमुख आधार अध्यात्म और योग पर आधारित था जो मानसिक शांति आत्मबल और आत्मविश्वास बढ़ाने में मुख्य भूमिका निभाता है।

शोध का उद्देश्य

1. **स्वामी विवेकानंद के शिक्षा दर्शन का परिचय देना:** उनके शिक्षा से जुड़े विचारों को सरल भाषा में प्रस्तुत करना, जैसे – आत्मज्ञान, चरित्र निर्माण, सेवा भावना, और समग्र व्यक्तित्व विकास।
2. **उनके शिक्षा विचारों की मुख्य विशेषताओं का विश्लेषण करना:** उदाहरण के लिए – शिक्षा का उद्देश्य आत्मा की अभिव्यक्ति है, आत्मविश्वास और नैतिकता का विकास होना चाहिए। शिक्षा को जीवनोपयोगी होना चाहिए।
3. **वर्तमान शिक्षा प्रणाली में उनकी विचारधारा की प्रासंगिकता बताना:** आज की शिक्षा में मूल्यों की कमी, बेरोजगारी, परीक्षा–केन्द्रित शिक्षा जैसी समस्याओं का समाधान उनके विचारों से कैसे संभव हो सकता है।
4. **राष्ट्र निर्माण और मानव निर्माण में उनके शिक्षा दर्शन का योगदान समझाना:** शिक्षा को केवल नौकरी पाने का साधन न मानकर, समाज और राष्ट्र के प्रति जिम्मेदार नागरिक तैयार करने का माध्यम समझना।
5. **युवाओं के लिए मार्गदर्शन प्रदान करना:** आज के युवाओं को स्वामी विवेकानंद के विचारों से प्रेरणा लेने की आवश्यकता क्यों है, यह स्पष्ट करना।
6. **शिक्षा के माध्यम से सामाजिक व सांस्कृतिक पुनर्जागरण की भूमिका दर्शाना:** विवेकानंद जी मानते थे कि शिक्षा से समाज में जागरूकता और संस्कारों का पुर्नजीवन संभव है।

विद्वानों की दृष्टि में विवेकानंद

शैक्षिक विचारको में स्वामी विवेकानंद जी का स्थान अद्वितीय था। अपनी बहुमुखी प्रतिभा एवं तीव्र बुद्धि के कारण उन्होंने ऐसे व्यावहारिक शिक्षा दर्शन का उद्भव किया जिसमे समस्त दार्शनिक विचारधाराओं का संश्लेषण निहित है। उनसे प्रभावित होकर महान दार्शनिको, राजनीतिज्ञों ने उनकी महानता का गुणगान किया है।

गुरु रबिन्द्रनाथ टैगोर कहते हैं, "यदि आप भारत को जानना चाहते हैं,तो विवेकानंद का अध्ययन करे उनमे सब कुछ सकारात्मक है नकारात्मक कुछ भी नही।"

सुभाषचंद्र बोस ने कहा था, "विवेकानंद ने अपने समूचे जीवन को समग्र राष्ट्र एवं मानवता के नैतिक तथा आध्यात्मिक उत्थान के लिए समर्पित कर दिया था।"

महात्मा गाँधी ने प्रभावित होकर कहा था, "विवेकानंद के कार्यों को पढ़ने के बाद मेरे देश के प्रति मेरा प्रेम हजारों गुना बढ़ गया।"

श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित के कथन थे, "आधुनिक भारत के निर्माताओं में एक,स्वामी विवेकानंद ,भारतीय पुर्नजागरण आन्दोलन के, जो उन्नीसवीं सदी के प्रारंभ में राममोहन राय से शुरू हुआ ,सुन्दरतम विकसित पुष्प थे।"

मुंशी प्रेमचंद जी ने कहा, "स्वामी जी ने जिस आध्यात्मिक आलोक को हम लोगों के लिए प्रज्ज्वलित किया वह चिरकाल तक जगत को ज्योति प्रदान करता रहेगा।"

जवाहरलाल नेहरु के शब्द "यदि आप स्वामी विवेकानंद की रचनाएं और व्याख्यान पढ़ें तो उनमे एक अद्भुत बात देखेंगे की वो कभी पुरानी प्रतीत नहीं होती।"

विनोवा भावे जी कहते हैं "विवेकानंद जी ने हमें ना केवल अपनी शक्ति के विषय में सजग बनाया बल्कि हमारे दोषों तथा दुर्बलताओं के प्रति भी हमारा ध्यान आकृष्ट किया।"

वर्तमान समय में विवेकानंद के विचारों की प्रासंगिकता

स्वामी विवेकानंद का शैक्षिक दर्शन शिक्षा के वर्तमान संदर्भ में संविधान की प्रस्तावना में भी परिलक्षित होता है जिसमे धर्मनिरपेक्ष, समाजवादी, लोकतंत्रात्मक शिक्षा प्रदान करने की व्यवस्था की गई है। स्वामी जी भी धर्मनिरपेक्ष समतावादी मानवतावादी शिक्षा प्रदान करने के पक्षधर थे। आज व्यावसायिक और तकनीकी शिक्षा को बढ़ावा देकर युवाओं को नौकरी के लिए भटकने की अपेक्षा स्वरोजगार के माध्यम से आत्मनिर्भर बनाने को प्रोत्साहित किया जा रहा है।

वर्तमान में शारीरिक विकास के लिए खेल को पाठ्यक्रम का अनिवार्य भाग बनाया गया है। छात्रों तक शिक्षा की अनिवार्य पहुँच के लिए शिक्षा को मूल अधिकार में शामिल किया गया है तथा 0 से 14वर्ष तक की आयु के बच्चों को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा प्रदान की जा रही है। वर्तमान में बाल केन्द्रित शिक्षा को अपनाया गया है। छात्रों एवं युवाओं में नेतृत्व क्षमता के विकास के लिए विद्यालय और महाविद्यालयों में छात्रसंघ का गठन किया जाता है। यह सारे विषय जो पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है वह स्वामी विवेकानंद के शिक्षा दर्शन के विचारों की वर्तमान प्रासंगिकता है। स्वामी विवेकानंद जी कहते हैं ''आज जिस चीज की देश को आवश्यकता है ,वह है लोहे के समान दृढ़ मांसपेशियाँ और फौलाद के स्नायु, प्रबल प्रचंड इच्छा शक्ति जो प्रकृति के गुप्त रहस्यों को भेद सके और जैसे भी हो अपने उद्देश्य की पूर्ति में समर्थ हो।''

विवेकानंद जी व्यावसायिक, तकनीकी व कौशल आधारित शिक्षा के विकास पर अत्याधिक जोर देते थे जिससे युवा रोजगार के द्वारा आत्मनिर्भर बन सके। वर्तमान शिक्षा नीति 2020 में भी स्किल डेवेलपमेंट व्यावसायिक और तकनीकी शिक्षा को भी पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है जो स्वामीजी के शिक्षा दर्शन की प्रासंगिकता को वर्तमान में दर्शाता है। शिक्षा को केवल सैद्धांतिक ही नहीं अपितु व्यवहारिक भी होना चाहिए। वर्तमान युग में नैतिक मूल्यों पर भारी गिरावट आई है जिसके कारण वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में व्यवहारिक व नैतिक मूल्यों की शिक्षा पर ध्यान दिया जा रहा है जिससे एक जिम्मेदार और संवेदनशील समाज व राष्ट्र का निर्माण होगा। शिक्षा का उद्देश्य सामाजिक और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने वाला भी होना चाहिए।

आज नारी शिक्षा व महिला सशक्तिकरण प्रमुख मुद्दा है। स्वामी जी स्त्री शिक्षा व लैंगिक समानता को राष्ट्र की प्रगति के लिए आवश्यक मानते थे। आत्मनिर्भर व स्वावलंबी भारत के निर्माण पर विवेकानंद जी ने विशेष बल दिया था। वर्तमान में भारत सरकार भी स्वावलंबी व आत्मनिर्भर भारत बनाने की दिशा में प्रयासरत है। वर्तमान में अधिकांश युवा पीढ़ी मानसिक तनावों व अवसादों से ग्रस्त है। इन तनावों व अवसादों से मुक्ति के लिए "योग एवं ध्यान केन्द्रीकरण" पर जोर देने वाली शिक्षा पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है। आज से 123 वर्ष पूर्व स्वामी जी ने कहा था। ''त्याग और सेवा भारत के राष्ट्रीय आदर्श है, राष्ट्र को इन्ही दिशाओं में प्रगति करने दो अन्य सारी बातें अपने आप ठीक हो जाएँगी।'' भारत सरकार ने सेवा को राष्ट्रीय सेवा योजना के रूप में विद्यालय व महाविद्यालयीन पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग बनाकर विशेष महत्व प्रदान किया है ।

निष्कर्ष

21वीं सदी में पूरी मानवता के संपूर्ण उत्थान व विकास में विवेकानंद की शिक्षा दर्शन अत्यंत प्रासंगिक है। आज हमारी शिक्षा व्यवस्था अपने मूल उद्देश्यों से भटक चुकी है। व्यक्तित्व में बिखराव, विघटन, चरित्र व नैतिक पतन की स्थिति उत्पन्न होकर समाज व राष्ट्र को खोखला बनाती जा रही है। अपराधिक गतिविधियों में वृद्धि, बेरोजगारी, गरीबी, मानवीय मूल्यों में गिरावट अत्यंत विचारणीय व चिंतनीय है। इन सभी का समाधान स्वामी जी के शिक्षा दर्शन में समाहित है। अध्यात्म व योग शिक्षा वेदांत दर्शन, व्यवहारिक, व्यावसायिक व तकनीकी शिक्षा, चरित्र निर्माण की शिक्षा, नैतिक शिक्षा व मानव निर्माण की शिक्षा के द्वारा व्यक्ति,समाज,राष्ट्र व विश्व को वैमनश्य के वातावरण से मुक्त करके सर्वधर्म–समभाव,विश्व बंधुत्व व विश्व कल्याण का आदर्श वातावरण स्थापित करके ''सर्वे भवंतु सुखिना, सर्वे संतु निरामया, सर्वे भद्राणि पश्यंतु मा कश्चितदुखभाग्भवेत'' की भावना को चरितार्थ कर सकते हैं।

विवेकानंद जी की शिक्षा संबंधी दृष्टिकोण उनके समय तक ही सीमित नहीं थी अपितु यह वर्तमान परिपेक्ष्य

में भी पूरी तरह प्रासंगिक है। उनका शिक्षा दर्शन न केवल ज्ञान प्रदान करने तक सीमित था वरन् व्यक्ति के समग्र विकास समाज सुधार, राष्ट्र निर्माण सहिष्णुता, विश्व बंधुत्व और अंतराष्ट्रीय सद्भावना के विकास में भी सहायक है। यदि उनके विचारों को वर्तमान शिक्षा प्रणाली में समावेश करें तो ये केवल छात्रों की शारीरिक बौद्धिक, नैतिक व आध्यात्मिक विकास में सहायक नही होगा अपितु एक सशक्त,समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष आत्मनिर्भर व प्रगतिशील समाज व राष्ट्र के निर्माण में भी सहायक होगा।

संदर्भ सूची

1. अग्रवाल, जे.सी. (2008) उभरते भारतीय समाज में शिक्षा, शिप्रा प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. बनर्जी, ए.के. (2015) स्वामी विवेकानंद का शैक्षिक दर्शन, *शैक्षिक अनुसंधान और विकास के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल,* वॉल. 4 (3), पृ 30–35।
3. कुमार, के.जी.एन. (2015) *समकालीन शिक्षा पर एक दार्शनिक समीक्षा,* राधा पब्लिकेशन, गुप्त अंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली।
4. पांडेय, रामशकल (2007) *शिक्षा के दार्शनिक सिद्धांत,* अग्रवाल प्रकाशन, आगरा 2, पृ. 202– 203।
5. सक्सेना, एन. आर. स्वरूप (2009) *शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत,* आर लाल बुक डिपो, मेरठ, पृ. 154 –155।
6. वर्मा, ओमप्रकाश (2018) *युवा चेतना के प्रवर्तक– स्वामी विवेकानंद,* छत्तीसगढ़ राज्य हिंदी ग्रंथ अकादमी, रायपुर, छत्तीसगढ़।

****